

कच्चातीवू द्वीप: सामरिक क्षेत्र

यह एडिटरियल 03/04/2024 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "Katchatheevu and beyond, islands and India's new geopolitics" लेख पर आधारित है। इसमें चर्चा की गई है कि पिछले एक दशक की भारतीय विदेश नीति की समीक्षा से प्रकट होता है कि भारत के उभरते रणनीतिक परदृश्य में द्वीप राज्यों एवं क्षेत्रों का महत्त्व बढ़ा है। लेख में हाल ही में चर्चा में आए कच्चातीवू द्वीप और भारत-श्रीलंका संबंधों के लिये इसके महत्त्व पर भी विचार किया गया है।

प्रलिस के लिये:

[भारत-श्रीलंका संबंध](#), [बौद्ध धर्म](#), [नवीकरणीय ऊर्जा](#), [इंदि महासागर](#), [कच्चातीवू](#), [इंडो-पैसिफिक](#), [अगालेगा द्वीप समूह](#), [कवाड](#), [मॉरीशस](#)।

मेन्स के लिये:

भारत के लिये कच्चातीवू द्वीप समूह का महत्त्व तथा भविष्य पर प्रभाव।

चाहे वह मालदीव हो (जो अब चीन के साथ बढ़ते समुद्री संघर्ष के बीच भारत के लिये अधिक महत्त्व रखने लगा है) या प्रशांत द्वीप समूहों में से संसाधन-संपन्न पापुआ न्यू गिनी के साथ भारत की नई संलग्नता, [मॉरीशस के अगालेगा द्वीप](#) पर अवसंरचना का संयुक्त विकास हो या पूर्वी [इंदि महासागर](#) के द्वीपों में ऑस्ट्रेलिया के साथ सहयोग या पूर्व में स्थिति अंडमान, पश्चिम में स्थिति लक्षद्वीप एवं श्रीलंका से सटे कच्चातीवू को विकसित करने पर सरकार का ध्यान—द्वीप क्षेत्र भारत की नई भू-राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनकर उभरे हैं।

आसन्न [लोकसभा](#) चुनाव के परदृश्य में एक बार फिर कच्चातीवू द्वीप चर्चा में आया है। तमलिनाडु के मतदाताओं को लुभाने के लिये यह एक उपयुक्त विषय प्रस्तुत कर रहा है, जहाँ श्रीलंका के साथ मछुआरों का मुद्दा लंबे समय से विमर्श में शामिल रहा है।

कच्चातीवू द्वीप:

परिचय:

- कच्चातीवू द्वीप (Katchatheevu Islands) भारत के दक्षिण-पूर्वी तट (तमलिनाडु) और श्रीलंका के उत्तरी तट के बीच पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) में स्थिति नरिजन द्वीपों की एक जोड़ी है।
- इनमें से बड़े द्वीप को कच्चातीवू, जबकि छोटे को इमरावन (Imaravan) के नाम से जाना जाता है। ये द्वीप अपनी रणनीतिक स्थिति और भारत एवं श्रीलंका दोनों की मत्स्यग्रहण गतिविधियों में उनके महत्त्व के कारण ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

मछुआरों का मुद्दा:

- कच्चातीवू का स्वामित्व भारत और श्रीलंका के बीच विवाद का एक प्रमुख मुद्दा रहा है, विशेष रूप से आसपास के जल क्षेत्र में मछली पकड़ने के अधिकार को लेकर। तमलिनाडु के मछुआरे इससे विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं, क्योंकि वे इस क्षेत्र में मछली पकड़ने के पारंपरिक अधिकारों का दावा करते हैं।
- कच्चातीवू को श्रीलंका को सौंपे जाने के परिणामस्वरूप भारतीय मछुआरों के द्वीप के आसपास के पारंपरिक मत्स्यग्रहण क्षेत्रों तक पहुँच पर प्रतिबंध लग गया है। इसके कारण कई संघर्ष हुए और बार-बार श्रीलंकाई अधिकारियों द्वारा भारतीय मछुआरों को गरिष्ठार किया गया है।

राजनीतिक और कानूनी रुख:

- राजनीतिक रूप से कच्चातीवू के मुद्दे का इस्तेमाल भारत में विभिन्न दलों द्वारा इस मामले पर सरकार के रुख की आलोचना करने के लिये किया गया है। इस द्वीप को श्रीलंका को सौंपने वाले समझौतों की वैधता के संबंध में कानूनी चुनौतियाँ भी पेश की गई हैं।

द्विपक्षीय चर्चाएँ:

- मुद्दे की विवादास्पद प्रकृति के बावजूद भारत और श्रीलंका दोनों तमलिनाडु के मछुआरों की चिंताओं को दूर करने के लिये द्विपक्षीय चर्चा में संलग्न रहे हैं। इस मुद्दे को सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने के लिये संयुक्त गश्त और संयुक्त मत्स्यग्रहण क्षेत्र जैसे विभिन्न प्रस्तावों का सुझाव दिया गया है।



भारत-श्रीलंका संबंधों की वर्तमान स्थिति:

■ ऐतिहासिक संबंध:

- भारत और श्रीलंका के बीच प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संबंधों का एक सुदीर्घ इतिहास रहा है।
- दोनों देशों के बीच मज़बूत सांस्कृतिक संबंध हैं, जहाँ कई श्रीलंकाई लोग अपनी वरिष्ठता को भारत से जोड़कर देखते हैं। **बौद्ध धर्म**, जसिकी उत्पत्ति भारत में हुई, श्रीलंका में भी एक महत्त्वपूर्ण धर्म है।

■ भारत से वित्तीय सहायता:

- भारत ने श्रीलंका के अभूतपूर्व आर्थिक संकट के दौरान उसे लगभग 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता प्रदान की, जो देश को संकट से उबारने में महत्त्वपूर्ण सदिध हुई।
- **वदेशी मुद्रा भंडार** की भारी कमी के कारण श्रीलंका वर्ष 2022 में एक वनिशकारी वित्तीय संकट की चपेट में आ गया था, जो उसके लिये वर्ष 1948 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता के बाद की सबसे संकटपूर्ण स्थिति थी।

■ ऋण पुनर्गठन में भूमिका:

- श्रीलंका को उसके ऋण के पुनर्गठन में मदद करने के लिये भारत ने **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** और ऋणदाताओं के साथ सहयोग के निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।
- भारत, चीन और जापान के बीच भारत पहला देश था जसिने श्रीलंका के वित्तिपोषण एवं ऋण पुनर्गठन के लिये अपना समर्थन पत्र सौपा था।

■ कनेक्टिविटी के लिये संयुक्त दृष्टिकोण:

- दोनों देश एक संयुक्त दृष्टिकोण पर सहमत हुए हैं जो व्यापक कनेक्टिविटी पर बल देता है, जसिमें लोगों के परस्पर संपर्क (People to People connectivity), नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग, लॉजिस्टिक्स, बंदरगाह कनेक्टिविटी और बजिली व्यापार के लिये ग्रडि कनेक्टिविटी शामिल हैं।
- श्रीलंका **बमिस्टेक (BIMSTEC)** और **सारक (SAARC)** जैसे समूहों का भी सदस्य है जसिमें भारत अग्रणी भूमिका निभाता है।
- दोनों देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करने और विकास को बढ़ावा देने के लिये **आर्थिक और प्रौद्योगिकी सहयोग समझौते (Economic and Technology Cooperation Agreement- ETCA)** की संभावना तलाश रहे हैं।

■ बहु-उत्पाद पेट्रोलियम पाइपलाइन पर समझौता:

- भारत और श्रीलंका दोनों भारत के दक्षिणी भाग से श्रीलंका तक एक बहु-उत्पाद पेट्रोलियम पाइपलाइन (Multi-Product Petroleum Pipeline) स्थापति करने पर सहमत हुए हैं।
- इस पाइपलाइन का उद्देश्य श्रीलंका को ऊर्जा संसाधनों की सस्ती एवं विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करना है। आर्थिक विकास और प्रगति में ऊर्जा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को चहिनति करते हुए इस पेट्रोलियम पाइपलाइन की स्थापना को प्रेरति कर रही है।

■ श्रीलंका द्वारा UPI का अंगीकरण:

- श्रीलंका ने भारत की UPI सेवा को अपनाया है, जो दोनों देशों के बीच फनिटेक कनेक्टिविटी बढ़ाने की दशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- **व्यापार नपिटान के लिये भारतीय रुपए** के उपयोग से श्रीलंका की अर्थव्यवस्था को मदद मलि रही है। ये श्रीलंका के आर्थिक सुधार और वृद्धि में मदद के लिये कुछ ठोस कदम हैं।

■ आर्थिक संबंध:

- अमेरिका और बरटिन के बाद भारत श्रीलंका का तीसरा सबसे बड़ा नरियात गंतव्य है। श्रीलंका के 60% से अधिक नरियात **भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** का लाभ उठाते हैं। भारत श्रीलंका में एक प्रमुख नविशक भी है।
- भारत परंपरागत रूप से श्रीलंका के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक रहा है और श्रीलंका सारक में भारत के सबसे बड़े व्यापार भागीदारों में से एक बना हुआ है। वर्ष 2021 में 5.45 बलियिन अमेरिकी डॉलर के समग्र द्वपिकषीय माल व्यापार के साथ भारत श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था।
- वर्ष 2022 में 100,000 से अधिक पर्यटकों के साथ भारत श्रीलंका के लिये पर्यटकों का सबसे बड़ा स्रोत था।

■ रक्षा:

- भारत और श्रीलंका संयुक्त सैन्य (**मतिर शकत्ति**) और नौसैन्य अभ्यास (**SLINEX**) आयोजति करते हैं।

कच्चातवि द्वीप के संबंध में भारत-श्रीलंका संबंध कसि प्रकार विकसति हुए हैं?

- **औपनविशकि काल (19वीं सदी तक):** श्रीलंका ने क्षेत्राधिकार के साकष्य के रूप में 1505 से 1658 ई. तक द्वीप पर पुरतगालियों के नयित्रण का हवाला देते हुए कच्चातवि पर अपनी संप्रभुता का दावा कथि।
 - औपनविशकि युग में इस लघु द्वीप पर अंग्रेजों का शासन था। ऐतहिसकि रूप से, माना जाता है कि तिमलिनाडु में रामनाड या वर्तमान रामनाथपुरम के राजा के पास इस द्वीप का स्वामतिव था, जो बाद में मद्रास प्रेसीडेंसी का हसिसा बन गया।
- **20वीं सदी में परविरतन:** श्रीलंका और भारत दोनों ने 1920 के दशक में कच्चातवि पर मछली पकड़ने के वशिष अधिकार की तलाश की, जसिसे लंबे समय तक वविाद चला। 1940 के दशक में दोनों देशों की स्वतंत्रता के बाद भी यह मुद्दा बना रहा। वर्ष 1968 में श्रीलंका के प्रधानमंत्री ने भारत की यात्रा के दौरान कच्चातवि पर श्रीलंका की संप्रभुता का दावा करते हुए आधिकारिक तौर पर इस मामले को उठाया।
 - इसके बाद भारत और श्रीलंका के प्रधानमंत्रियों—इंदरि गांधी और सरिमावो भंडारनायके के बीच क्रमकि वार्ता के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच वर्ष 1974 में एक समझौते (Agreement on the Boundary in Historic Waters) पर हस्ताक्षर कथि गए।
 - इस समझौते ने ऐतहिसकि साकष्यों, कानूनी सिद्धांतों और पूर्व-दृष्टांतों के आधार पर एक सीमा को परिभाषति कथि, जो कच्चातवि को श्रीलंका के पश्चिमी तट से एक मील की दूरी पर उसके अधिकार क्षेत्र में शामिल करता था।
- **भारतीय मछुआरों के लिये महत्त्व:** समझौते के अनुच्छेद 4 में यह नरिधारति कथि गया है कि **प्रत्येक राज्य के पास पाक जलडमरूमध्य और पाक खाड़ी में समुद्री सीमा के किनारे के जल, द्वीपों, महाद्वीपीय शैल्य और उप-मृदा पर संप्रभुता एवं वशिष क्षेत्राधिकार और नयित्रण प्राप्त होगा तथा कच्चातवि द्वीप के बारे में माना गया कि यह श्रीलंकाई जलक्षेत्र में आता है।**
 - अगले अनुच्छेद में कहा गया है कि भारतीय मछुआरों एवं तीर्थयात्रियों को पहले की तरह द्वीप तक पहुँच प्राप्त होगी और इन उद्देश्यों के लिये श्रीलंका से यात्रा दस्तावेज़ या वीज़ा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होगी।

वशि्व में भारत के लिये कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र:

■ हदि-प्रशांत (Indo-Pacific):

- हदि-प्रशांत का वचिार सर्वप्रथम जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिजो आबे द्वारा वर्ष 2007 में **भारतीय संसद** में प्रस्तुत अपने भाषण में प्रस्तावति कथि गया था। उन्होंने भारत से हदि और प्रशांत “दो महासागरों के संगम” पर वचिार करने का आग्रह कथि था।
- वर्ष 2018 के ग्रीष्मकाल में सगिापुर में आयोजति वार्षिक “शांगरी ला डायलॉग” में प्रधानमंत्री मोदी के संभाषण में इसकी चर्चा के साथ **‘हदि-प्रशांत’** के वचिार को औपचारिक रूप से अपनाने में भारत को एक दशक से अधिक का समय लगा।
- चीन के साथ भारत के बगिड़ते संबंध (वर्ष 2013, 2014 और 2017 में सैन्य संकटों की एक शृंखला द्वारा चहिनति) और अमेरिका के साथ बढ़ती रणनीतिक साझेदारी के परिप्रेक्ष्य में अंततः भारत ‘हदि-प्रशांत’ के वचिार की ओर आगे बढ़ा।
- हदि-प्रशांत अब भारतीय वमिर्श में सुस्थापति हो गया है। इसके संस्थागत लंगर के रूप में **‘कवाड’ (Quad)** भी आकार ले चुका है, जो ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका को एक साथ लाता है।

■ यूरेशिया:

- जापान और अमेरिका ने हदि-प्रशांत या ‘इंडो-पैसफिक’ के वचिार को लोकप्रिय बनाया तो रूस ने ‘यूरेशिया’ (Eurasia) के वचिार को आगे बढ़ाया है। यूरोप और एशिया में वसितृत एक बड़ी शकत्तिके रूप में रूस वशिाल यूरेशियाई भूभाग को अपने प्रभाव के नैसर्गिक क्षेत्र के रूप में देखता है।
 - रूस और चीन द्वारा संयुक्त रूप से गठति **शंघाई सहयोग संगठन (SCO)** ने यूरेशिया के वचिार को संस्थागत अभिव्यक्ति प्रदान कथि।
- महाद्वीपीय एशिया में भारत की हसिसेदारी, रूस के साथ इसके दीर्घकालिक संबंध और एक बहुधरुवीय वशि्व की इसकी तलाश को देखते हुए, यूरेशिया कई पहलुओं में भारत के लिये अत्यंत महत्त्व रखता है।

■ नॉर्डिक क्षेत्र:

- नॉर्डिक क्षेत्र, नॉर्डिक-बाल्टिक गठबंधन और काकेशस भारत के लिये यूरोप में और इसके आसपास परिणाम के नए क्षेत्र के रूप में उभरे हैं। यूक्रेन ने हाल ही में उस मध्य यूरोप में युद्ध और शांति को आकार देने में भारत की संभावति भूमिका को रेखांकति कथि है, जसिकी अशांत राजनीति ने दो **वशि्व युद्धों** को जन्म दथिा था और तीसरे को आमंत्रति करने का खतरा उत्पन्न कर रही है।

■ भारत-मध्य पूर्व:

- मध्य-पूर्व के माध्यम से भारत एवं यूरोप को जोड़ने वाले एक आर्थिक गलियारे का प्रस्ताव, **अब्राहम समझौते**, गाज़ा में संघर्ष, अरब खाड़ी का बढ़ता प्रभाव, संयुक्त अरब अमीरात एवं सऊदी अरब के साथ भारत के मज़बूत होते संबंध, **लाल सागर** क्षेत्र में लगभग 20 भारतीय

नौसैनिकी जहाजों की तैनाती और अफ्रीका के साथ बढ़ते संबंध से मध्य-पूर्व, अफ्रीका, पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र और पश्चिमी हिंद महासागर का अधिक परस्पर-संबंध परिरेक्ष्य सामने आ रहा है।

- पहले उन्हें वशिष्ट क्षेत्र के रूप में देखा जाता था, लेकिन अब वे भारत के विकास पथ के लिये अपनी उल्लेखनीय प्रासंगिकता को उजागर करते हैं।

भारत के लिये कच्चातवि द्वीप की प्रासंगिकता:

■ रणनीतिक महत्त्व:

- **भू-राजनीतिक अवस्थिति:** कच्चातवि पाक जलडमरूमध्य में रणनीतिक अवस्थिति रखता है, जो बंगाल की खाड़ी को मन्नार की खाड़ी और हिंद महासागर से जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्ग है।
- कच्चातवि पर नियंत्रण भारत को जहाजों की आवाजाही और संभावित सुरक्षा खतरों सहित क्षेत्र में विभिन्न समुद्री गतिविधियों की नगिरानी में रणनीतिक लाभ प्रदान कर सकता है।

■ आर्थिक महत्त्व:

- **मत्स्य संसाधन:** कच्चातवि के आसपास का जल क्षेत्र मछली एवं अन्य समुद्री खाद्य सहित समुद्री संसाधनों से समृद्ध है, जो तमलिनाडु के मछुआरों की आजीविका के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- **वाणज्यिक क्षमता:** कच्चातवि पर नियंत्रण से मत्स्यग्रहण, जलीय कृषि एवं पर्यटन जैसी वाणज्यिक गतिविधियों के विकास में मदद मिल सकती है, जिससे क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

■ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व:

- **ऐतिहासिक दावे:** कच्चातवि भारत के लिये ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, जहाँ तमलिनाडु के मछुआरों द्वारा मछली पकड़ने के सदियों पुराने पारंपरिक अधिकारों का दावा किया जाता है।
- **सांस्कृतिक संबंध:** इस द्वीप का भारत और श्रीलंका में तमिल समुदायों के लिये ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है, क्योंकि यह प्रसिद्ध तमिल संत [तट्टिवल्लुवर](#) से संबंध है।

■ कानूनी और राजनयिक महितार्थ:

- **राजनयिक संबंध:** वर्ष 1974 और 1976 के समझौतों के माध्यम से कच्चातवि को श्रीलंका को सौंपे जाने के बावजूद, कच्चातवि का मुद्दा [भारत-श्रीलंका संबंधों](#) के लिये महितार्थ रखता है, जो प्रायः मछली पकड़ने के अधिकार और समुद्री सहयोग सहित विभिन्न मामलों पर द्विपक्षीय चर्चाओं एवं बातचीत को प्रभावित करता है।
- **अंतरराष्ट्रीय कानून:** कच्चातवि पर विवाद अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुप्रयोग, विशेष रूप से क्षेत्रीय संप्रभुता, समुद्री सीमाओं और तटीय राज्यों के अधिकारों के बारे में व्यापक प्रश्न उठाता है।
- **प्रादेशिक जल:** श्रीलंका द्वारा द्वीप पर नियंत्रण का भारत के प्रादेशिक जल और क्षेत्र में स्थापित [वशिष्ट आर्थिक क्षेत्र \(EEZ\)](#) पर प्रभाव पड़ता है।

■ मानवीय पहलू:

- **मानवाधिकार संबंधी चिंताएँ:** श्रीलंका द्वारा कच्चातवि के आसपास मत्स्यग्रहण गतिविधियों पर लगाए गए प्रतिबंधों ने विभिन्न मानवीय चिंताओं को जन्म दिया है, जिसमें भारतीय मछुआरों की गरिफ्तारी, उत्पीड़न और जान के नुकसान की घटनाएँ शामिल हैं।
- **समाधान की आवश्यकता:** अपनी जीविका के लिये जल पर निर्भर मछुआरों और उनके परिवारों के कल्याण एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये कच्चातवि मुद्दे को संबोधित करना मानवीय दृष्टिकोण से आवश्यक है।

■ सुरक्षा एवं तस्करी वशिष्टी अभियान:

- **तस्करी गतिविधियाँ:** कच्चातवि की भारतीय तट से निकटता इसे हथियारों, मादक पदार्थों और प्रतिबंधित सामग्री सहित विभिन्न तस्करी गतिविधियों का एक संभावित केंद्र बनाती है।
- **तस्करी गतिविधियों को रोकना:** श्रीलंका द्वारा द्वीप पर नियंत्रण से क्षेत्र में ऐसी गतिविधियों की नगिरानी करने और उन पर अंकुश लगाने की भारत की क्षमता पर प्रभाव पड़ता है।
 - भारत ने तस्करी एवं अन्य अवैध गतिविधियों के लिये कच्चातवि के उपयोग पर चिंता व्यक्त की है जो सुरक्षा के लिये खतरा पैदा कर सकते हैं।

नष्कर्ष:

कच्चातवि द्वीप अपने छोटे आकार के बावजूद अपनी रणनीतिक अवस्थिति, मछली पकड़ने के अधिकार पर प्रभाव और सांस्कृतिक महत्त्व के कारण भारत एवं श्रीलंका के बीच एक जटिल मुद्दा बना हुआ है। श्रीलंका को द्वीप के हस्तांतरण से द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण बने हैं और यह एक व्यापक समाधान की आवश्यकता को उजागर करता है जो समुद्री सुरक्षा, मछुआरों की आजीविका संबंधी चिंताओं और दोनों देशों की ऐतिहासिक भावनाओं का सम्मान करे। क्षेत्र में सहयोग और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिये नरितर संवाद, आपसी समझ और नवीन संसाधन-साझाकरण तंत्र के माध्यम से लंबे समय से जारी इस विवाद को हल करना महत्त्वपूर्ण है।

अभ्यास प्रश्न: तमलिनाडु के मछुआरों के लिये कच्चातवि समझौते के सामाजिक-आर्थिक महितार्थ और भारत-श्रीलंका संबंधों पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

[?/?/?/?/?/?/?/?/?/?]

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में देखा जाने वाला एलीफेंट पास का उल्लेख नमिनलखिति में से किस मामले के संदर्भ में किया जाता है? (2009)

- (a) बांग्लादेश
- (b) भारत
- (c) नेपाल
- (d) श्रीलंका

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न. भारत-श्रीलंका के संबंधों के संदर्भ में विविधता कीजिये कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीतिको प्रभावित करते हैं। (2013)

प्रश्न. 'भारत, श्रीलंका का बरसों पुराना मित्र है।' पूर्ववर्ती कथन के आलोक में श्रीलंका के वर्तमान संकट में भारत की भूमिका की विविधता कीजिये। (2022)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/katchatheevu-island-strategic-geography>

